'पत्र' संपादक के नाम

मेरा प्रशासन संबंधी कार्य होने से मुझे क्रोध बहुत ही ज्यादा आता था। लोगों की बातों से मेरा नियंत्रण खो जाता था लेकिन राजयोग की विधि जानने से तथा 'ज्ञानामृत' पढ़ने से दिल-दिमाग अंदर से, बाहर से हलका हो जाता है। क्रोध पर नियंत्रण होने से काम में सहजता और सरलता आयी। बोलने से पहले सोचने की क्षमता विकसित हुई। यह पहले नहीं थी, मैं कुछ भी उटपटांग किसी को भी बोल देता था। मैं क्या बोल रहा हूँ, मुझे खुद को भी पता नहीं रहता था। मैं अपना आपा खो देता था। सेवाकेन्द्र में जाने से, 'ज्ञानामृत' पढ़ने से मेरे जीवन में परिवर्तन आया है। मैं अन्तर्मुखी हो गया, कम बोलने लगा, लोगों को अपनी बात समझाने में सफल होने लगा। जो लोग मुझे टाल देते थे वे मुझसे बात करने लगे, मुझसे मित्रतापूर्ण व्यवहार करने लगे। मेरी छवि जो पहले क्रोध वाली थी वह धीरे-धीरे खत्म होने लगी, इसका श्रेय 'ज्ञानामृत' को देता हूँ।

बाबा ने कहा है, कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो। इसे जीवन में उतारने से काफी परिवर्तन हुआ है। जो पहले आत्मविश्वास में कमी थी वह दूर हुई है। प्रतिदिन पत्र व्यवहार में काफी गलतियाँ होती थीं उनमें काफी सुधार हुआ है। 'ज्ञानामृत' पत्रिका के स्वर्णजयन्ती वर्ष की शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। यह दवा और दुआ का तथा लोगों के जीवन की उदासी दूर करने का कार्य कर रही है।

– प्रमोद एस.मेश्राम,
ढेर का बालाजी, जयपुर

ज्ञानामृत के द्वारा मेरे आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हुई है तथा इसे निरन्तर पढ़ने से जीवन सुखमय हो गया है। पत्रिका का हर लेख मन को मज़बूत बनाता है।

– एन.पी.शर्मा,
सेवानिवृत्त बैंककर्मी, जालन्धर

'ज्ञानामृत' ज्ञान प्रदान करने वाली अद्भुत पत्रिका है। प्रतिमास समय पर आने की प्रतीक्षा करता रहता हूँ। इसके सभी लेख प्रशंसनीय होते हैं जिनसे समस्या का निपटारा, उत्तम व्यवहार, मन की ताज़गी, ईश्वरीय प्रेम, मानसिक शान्ति, रोग-शोक-भय से मुक्ति, क्रोध-मोह का समाधान और आत्मा की सुषुप्त शक्तियों का जागरण हो जाता है। 'ज्ञानामृत' ने कठिन से कठिन समस्या का समाधान समझाकर सन्तुष्ट किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका यूँ ही समाज की सेवा करती रहे।

– चरणसिंह, बड़ौत (बागपत)

अगस्त, 2014 अंक में सम्पादकीय 'कर्मों का खाता-2' इतना सटीक, साफ एवं बुद्धिमत्ता से लिखा गया है कि इसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। यह आम आदमी के समझने लायक है तथा सत्य की कसौटी पर पूरा-पूरा बैठता है। इसको समझने के बाद इन्सान गलत काम करने से बच सकता है। शिवबाबा आपको इतनी सद्बुद्धि दें कि आप भविष्य में और भी अच्छे लेख लिखें। मानवता की सेवा का यह एक अद्वितीय रास्ता है।

– भूपसिंह जांगडा, सिरसा

सितम्बर, 1 तारीख से 15 तारीख तक महाप्रबंधक दूरसंचार जिला कार्यालय (बी.एस.एन.एल.), बंगाई गाँव (असम) में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इसमें हम अहिन्दी भाषी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। हिन्दी दिवस (15 तारीख) के समापन समारोह में हमने 'ज्ञानामृत' पत्रिका सभी कर्मचारियों को वितरित की। इसे पढ़कर सभी बड़े खुश हुए और इसके प्रत्येक लेख की काफी सराहना की।

– ब्रह्माकुमार दिलीप कोच,
बंगाई गाँव (असम)